APPENDIX-IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY

AJMER

Format of outline of proposed Research Work

(To be supplied in Six Copies)

1. Name of Scholar (In English) : **NARESH KUMAR VERMA**

(In Hindi) : नरेश कुमार वर्मा

2. Title of the Research Work :

(In English) : **Reality Awareness in the Satirical Writing of Gopal Chaturvedi**

(In Hindi) : गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में यथार्थ चेतना

3. Location

A. Institution/Department

Where the work is to be done : **Govt. P.G. College, Tonk (Raj.)**

B. Geographical area of Investigation, If any : **NIL**

4. Introduction Importance of proposed Investigation, Objectives
प्रस्तावित शोध कार्य का परिचयात्मक महत्व एवं उद्देश्य

साहित्य मानव चेतना की अभिव्यक्ति है। चेतना अनुभूति की सघनता तथा चिन्तन की गहनता के समन्वित आधार पर अपना स्वरूप ग्रहण करती है। अनुभूति की संवेदनशीलता नाद सौन्द्रर्य तथा माधुर्य के सम्मिश्रण से जहाँ "पद्य" रूप धारण करती है वहीं चिन्तन, तर्कों की श्रृंखला, विचारों के क्रम, मर्यादा तथा सूक्ष्मता की सीमा से बंधकर छंद मुक्त शैली के 'गद्य' रूप में अभिव्यक्त होता है।

गद्य अपनी विस्तृत सीमा क्षेत्र में कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रावृत, निबन्ध, डायरी, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, व्यंग्य–लेख, साक्षात्कार, पत्र, कैरीकैचर, एकालाप आदि अनेक विधाओं को समेटे हुए है। अपने बहुआयामी स्वरूप में गद्य जीवन की वास्तविकता एवं संश्लिष्टता को रूपायित करने की उसकी बढ़ती हुई क्षमता का द्योतक है। हिन्दी गद्य आज अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुका है वह जीवन की प्रत्येक गति और स्थिति को सार्थक एवं प्रभावी अभिव्यक्ति देने में सक्षम है। गद्य की इन विविध अभिव्यक्ति रूपों में से व्यंग्य, विगत आधी सदी से भारतीय जनमानस को जागृत करने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सफलतम विधा है।

लम्बे–लम्बे लेख, आलंकारिक निबन्ध और लम्बे–लम्बे सम्पादकीय की अपेक्षा व्यंग्य को पाठक नियमित रूप से न केवल पढ़ते हैं अपितु पढ़कर विचार विमर्श भी करते हैं। व्यंग्य में व्यक्त विचारों को समझने में उन्हें तनिक भी कठिनाई नहीं होती क्योंकि राजनीति, समाज, दर्शन, मनोविज्ञान, शिक्षा, चुनाव, भ्रष्टाचार, हवाला – दिवाला आदि की गूढ़ एवं आन्तरिक बातों को व्यंग्य में इतना सरलीकृत कर दिया जाता है कि

पाठक दाँतों तले अँगुली दबाने को विवश हो जाते हैं और वाह – वाह कर पढ़ते हैं, यही व्यंग्य की ताकत है।

प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के अनुसार, "व्यंग्य सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन कर वर्तमान से असन्तोष तथा बेहतर भविष्य की मानसिकता बनाता है। व्यंग्य कुण्ठा नहीं हैं और ना ही वह नकारात्मक है अपितु यह एक गम्भीर सकारात्मक लेखन है। यह जीवन से साक्षात्कार कर उसकी आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है। जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है जितनी गम्भीर रचनाकार की। उत्तम व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण होता है। "

प्राचीन हिन्दी साहित्य की प्राय सभी परम्पराएँ प्राकृत और अपभ्रंश से होकर संस्कृत साहित्य से आयी है। व्यंग्य भी इसका अपवाद नहीं हैं। संस्कृत – प्राकृत साहित्य में व्यंग्य के दो रूप दिखाई देते हैं प्रथम वैयक्तिक व्यंग्य या व्यंग्योक्ति तथा दूसरा सामाजिक व्यंग्य। अग्रेंजी में व्यंग्योक्तियों को "लेम्पून" तथा व्यंग्य को "सटायर" कहा जाता है। संस्कृत साहित्य में वैयक्तिक व्यंग्य के उदाहरण के रूप में कालीदास का "कुमारसम्भव" तथा भवभूति कृत "उत्तररामचरित" आदि नाटकों के संवाद द्रष्टव्य है किन्तु तत्कालीन समाज की समृद्दि और सम्पन्नता के कारण सामाजिक व्यंग्य की विरलता रही। अपभ्रंश काल में जैन मुनियों तथा बौद्व सिद्वों की रचनाओं में धार्मिक आडम्बरों तथा अंधविश्वासों पर प्रतिकिया के रूप में सामाजिक व्यंग्य की प्रारम्भिक झलक दिखलाई पड़ती है जो भक्तिकाल में धर्म के विकृत होते स्वरूप एवं टूटते–बिखरते मानव मूल्यों के संक्रमण के दौर में कबीर की वाणी के रूप में प्रखरता प्राप्त करती है। युगद्रष्टा कबीर ने युगीन विकृतियों को वैयक्तिक धरातल पर भोगते हुए अपनी अक्खड़ अन्दाज वाली बेबाक सपाटबयानी से उन पर तीख़ा प्रहार

किया। कबीर के व्यंग्यों की सामाजिक सौद्देश्यता ही उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाती है। प्रसंगवश भक्तिकाल में ही सूरदास के भ्रमरगीत तथा तुलसीदास के कलिकाल वर्णन के माध्यम से सामयिक विकृतियों को परोक्ष रूप से अनावृत किया गया। रीतिकाल में बिहारी को छोड़कर व्यंग्य का स्वर और भी संयत रहा।

रीतिकाल की सामन्ती – वृत्तियों एवं शोषण के विरूद्व व्यंग्य की प्रबल शक्ति को पहचान कर सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने उसे सामाजिक चेतना से जोड़ा। भारतेन्दु ने युग की समग्र पीड़ा को अपने व्यंग्यों में समायोजित कर समूचे कालखण्ड को आन्दोलित करने का प्रयास किया। इस युग में पं. बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण गोस्वामी तथा बालमुकुन्द गुप्त ने भारतेन्दु के स्वर को समवेत रूप दिया।

द्विवेदी युग में व्यंग्य की धारा को गति देने वालों में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (कछुआ धर्म), आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (दण्डदेव का आत्म निवेदन), सुदर्शन (ऑनरेरी मजिस्ट्रैट), उपेन्द्रनाथ अश्क (स्वर्ग की झलक), विश्वम्भरनाथ शर्मा ''कौशिक'' (दुबे जी की चिट्ठीयाँ) के साथ ही पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी, जी.पी.श्रीवास्तव, अन्नपूर्णानन्द वर्मा, बाबू गुलाबराय, बेढ़ब बनारसी, शिवपूजन सहाय तथा हरिशंकर शर्मा का विशिष्ट स्थान है।

चौथे दशक के उत्तरार्द्ध में जनवादी चेतना के उदय के साथ आर्थिक विषमता तथा सामाजिक अन्याय के प्रति व्यंग्य को हथियार बनाने वालों में निराला (कुकुरमुत्ता, बिल्लेसुर बकरिहा), प्रेमचन्द (सवा सेर गेहूँ , ठाकुर का कुँआं, शतरंज के खिलाड़ी), भगवतीचरण वर्मा (प्रायश्चित, मुगलों ने सल्तनत बख़्श दी), अज्ञेय उर्फ कुट्टिचातन, रघुवीर सहाय तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रमुख है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्य ने अपनी विषय व्यापकता से न केवल सब विधाओं को अपनी क्रोड़ में समेट लिया अपितु स्वयं एक विधा बन

गया। जिसने राजनीति और प्रशासन, संस्कृति और धर्म, शिक्षा और साहित्य, अर्थनीति और व्यवसाय, चिकित्सा तथा आरोग्य, अदालत और कानून सरीखे जीवन के किसी भी क्षेत्र को व्यंग्यकार की सर्वदर्शी नज़रों से अछूता नहीं रखा। वस्तुतः व्यंग्य का विस्तार उस वर्तमान मूल्यहीनता की देन है, जो जीवन के हर पक्ष को आक्रान्त कर लोक व्यवहार का अपरिहार्य अंग बन गयी है।

इस युग में व्यंग्यकारों की तीन सशक्त पीढ़ियों का अलग से अभ्युदय हुआ। सबसे पुरानी पीढ़ी के व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी, शरद जोशी व श्रीलाल शुक्ल प्रमुख है। इनमें से परसाई जी ने ही आधुनिक साहित्य में हिन्दी व्यंग्य को स्वतन्त्र पहचान दिलायी। परसाई के व्यंग्यों में राजनीतिक और सामाजिक मूल्यहीनता के प्रति असंतोष के साथ ही विपन्नों, वंचितों और संघर्षशील वर्गों के प्रति स्पष्ट प्रतिबद्धता हैं। वे विडम्बना और विसंगतियों को अपनी असाधारण क्षमता से पकड़ कर फंतासी, लोककथा, अन्योक्ति आदि विभिन्न शिल्पगत तंत्रों के प्रयोग से किसी भी कोण से पाठक की चेतना को झकझोर सकते हैं। जीवन में व्याप्त विसंगतियों की वे मात्र व्याख्या नहीं करते वरन् तह में जाकर उन कारणों की पड़ताल भी करते हैं जो इन्हें जन्म देते हैं।

साठोत्तरी युग की दूसरी पीढ़ी के चर्चित व्यंग्यकारों में सुदर्शन मजीठीया (इंडिकेट बनाम सिंडीकेंट, मुख्यमंत्री का डन्डा), नरेन्द्र कोहली (गणतन्त्र का गणित), गोपाल चतुर्वेदी (कुर्सीपुर के कबीर, अफसर की मौत, भारत और भैंस), लतीफ घोंघी (आदरणीय), शंकर पुणताम्बेकर (अहवाल एक शिक्षा संस्था का) , अजातशत्रु (चाचा जी का भाषण) , ज्ञानदेव अग्निहोत्री (शुतुरमुर्ग), कृष्णबिहारी मिश्र (बेहया का जंगल), केशवचन्द्र वर्मा (मुर्ग छाप हीरो) आदि शामिल है।

इस युग की तीसरी पीढ़ी के नये व्यंग्यकारों में प्रेम जनमेजय (चुनाव का आँखों देखा हाल), ज्ञान चतुर्वेदी (नरक यात्रा), अशोक शुक्ल (किस्सा किस्मत बदलाई के केस का), सूर्यबाला, बालेन्दु शेखर तिवारी (नये पुराने भागीरथ), हरिश नवल, सुरेश कान्त, दामोदर दत्त दीक्षित, यशवन्त व्यास तथा ईश्वर शर्मा का योगदान विशेष उल्लेखनीय है।

पिछले 60 वर्षों के दौरान जनतंत्र में धनतंत्र और भ्रष्टतंत्र के तालमेल ने स्थितियों को पूर्णतः बेकाबू कर दिया है। लालफीताशाही के बढ़ते प्रभाव तथा अफसरशाही की निर्लज्जता ने अपनी जड़े गहरी करने के जो प्रयास किये उन पर हमारे प्रबुद्ध, प्रगतिशील तथा प्रतिबद्ध व्यंग्यकारों यथा हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, रविन्द्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, शंकर पुणताम्बेकर, मनोहरश्याम जोशी से लेकर अद्यतन गोपाल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्यों से तीखा प्रहार किया है।

वर्तमान समय के प्रखरतम व्यंग्यकारो में एक गोपाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य को मनोरंजन का साधन न मानकर उसे युगीन सत्यों को उद्घाटित करने, वक्त की पेचीदगियों तथा आपा–धापियों के साथ ही विविध विसंगतियों पर गहरा प्रहार करने वाला औजार बनाकर उसे युग की यथार्थ चेतना से जोड़ा है। श्री चतुर्वेदी ने अपने लम्बे लेखकीय तथा प्रशासकीय अनुभव से जिन विसंगतियों, विद्रुपताओं तथा असहनीय परिस्थितियों को देखा – परखा तथा जाना – पहचाना है, उन्हें अपनी बेबाक, मधुर मगर खिलंदड़ी शैली में मुक्त भाव से व्यक्त किया है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में जीवन सापेक्षता, सकारात्मक सोच में परिपक्व अनुभव, मनुष्य की नैसर्गिक दुर्बलताओं और मानसिकताओं का अंकन, समस्या की तह तक जाने की तत्परता तथा संघर्षरत मनुष्यों के प्रति गहरी निष्ठा का दिग्दर्शन होता है। उनकी कलम मेंमौजूद तुर्शी जहाँ अपना नुकीलापन चुभाती है। वहीं उसमें मौजूद निष्ठा और ईमानदारी

पाठकों को लुभाने के साथ – साथ सोचने को भी विवश करती है। उनके व्यंग्यों को पढ़कर जहाँ आम जनता खिलखिलाती है, वहीं विसंगतियों तथा विद्रुपों से भरपूर मानसिकताएँ विचलित हो जाती है।

गोपाल चतुर्वेदी आज की जीवन पद्धति को गटर संस्कृति मानते हैं। आज गंगा नदी ही नहीं हमारी मानसी गंगा भी प्रदूषित है ऐसी आपकी धारणा है। आप स्वंय अपने को भी व्यंग्य का लक्ष्य बनाते है। आपकी लेखन शैली में एक निजता है। आप कथा के माध्यम से व्यंग्य करते हैं। इसलिये आपके व्यंग्यो में पाठक को एक प्रकार का कथा रस भी मिलता है। आपके व्यंग्य व्यवस्था के प्रति अविश्वास उत्पन्न करके उसे बदलने और बेहतर बनाने की चेतना उत्पन्न करते हैं। जो कि उनके व्यंग्यों की यथार्थ चेतना का द्योतक है। श्री चतुर्वेदी के दो काव्य संग्रह तथा सत्रह व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सारिका, इण्डिया टूडे, नवभारत–टाइम्स, हिन्दुस्तान, दैनिक भास्कर जैसे समाचार पत्रों में कई वर्षों तक नियमित व्यंग्य – स्तंम्भ लेखन कर चुके हैं। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित श्री चतुर्वेदी के प्रमुख व्यंग्य संग्रहों में अफसर की मौत (1985 ई0), दुम की वापसी (1987 ई0) खंभों के खेल (1990 ई0) फाईल पढ़ि पढ़ि (1991 ई0) दाँत में फँसी कुरसी (1996 ई0) गंगा से गटर तक (1997 ई0) , रामझरोखे बैठि के (2001 ई0), नैतिकता की लंगड़ी दौड़ (2002 ई0) . तथा भारत और भैंस (2003 ई0). प्रमुख है।

उपरोक्त विवेचन से सुस्पष्ट है कि श्री गोपाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व और कृत्तित्व पर आधारित शोधकार्य "गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य – लेखों में समकालीन यथार्थ चेतना" करने की प्रबल अभिरूचि एवं इच्छा तथा निर्देशिका आचार्या के शुभाशिर्वाद से इस शोधग्रथ का श्री गणेश कर रहा हूँ ।

समकालीनता एवं यथार्थ चेतना पर अभिकेन्द्रित विभिन्न लेखकों एवं कवियों पर पर्याप्त शोध कार्य विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो चुका है। किन्तु गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में यथार्थ चेतना पर शोधकार्य शोधकर्ता का मौलिक एवं नवीन प्रयास है। मेरा विश्वास है कि गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य – लेखों की समकालीन यथार्थ चेतना के अन्वेषण का मेरा यह प्रयास गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य– साहित्य पर शोध कार्य तथा अध्ययन की नई दिशा का उद्घाटन कर उनके विपुलसाहित्य पर अध्ययन– अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करेगा।

हिन्दी में व्यंग्य की परंपरा अत्यन्त समृद्ध रही है। जिसमें कबीर के धार्मिक एवं सामाजिक विसंगतियों पर किये गए चुभते व्यंग्यों से लेकर भारतेन्दु की 'भारत दुर्दशा' में व्यक्त देश की पराधीनताजन्य दुर्दशा तक तीखे व्यंग्यों के माध्यम से युगीन चेतना के यथार्थ को अभिव्यक्ति दी गई है।

व्यंग्य वस्तुतः एक सुशिक्षित मस्तिष्क की देन है और पाठक के स्तर पर भी सुशिक्षित प्रतिक्रिया की मांग करता है। वह पाठक को गुदगुदाने के लिये नहीं ब्लकि किसी विसंगति या विडम्बना के उद्घाटन से उसके संपूर्ण संस्कारों को विचलित करने की प्रक्रिया है। इसमें इकहरापन नहीं होता अपितु अभिव्यक्ति–शिल्प के अधिकाधिक उपादानों का खुलकर प्रयोग होता है। अतिशयोक्ति, विडंबना, सर्न्दभशीलता, पैरोडी, अन्योक्ति, आक्रोश–प्रदर्शन, ऐलिगरी, फंतासी आदि इसके प्रमुख उपादान है, व्यंग्य के पीछे लेखक का निश्चित चिंतन तथा दृष्टिकोण होता है। जिसका आधार लेकर वह स्थिति विशेष को अपनी प्रखर आलोचना का लक्ष्य बनाता है।

समकालीन व्यंग्य परम्परा के प्रखर हस्ताक्षर गोपाल चतुर्वेदी भी अपने लम्बे लेखकीय तथा प्रशासकीय अनुभव से उपजी यथार्थ चेतना

को अपने व्यंग्य लेखों में जाहिर करते हैं। उनके व्यंग्य लेखों में वर्तमान समय में टूटते – बिखरते मानवीय मूल्यों के साथ ही युगीन सत्यों का उद्घाटन दिखाई देता है। उनके व्यंग्य लेख मनोरंजक साहित्य का मैखाना नहीं है अपितु विपरीत परिस्थितियों के प्रति असंतोष जगाने के साथ – साथ बदलाव की वांछा और आकांक्षा को भी पोषित करता है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों के जादुई शीर्षक अपने कथ्य का संकेत देकर स्थितियों के व्यंग्य को उजागर करते हैं। जैसे धांधलेश्वर में धांधली के ज्वलंत उदाहरण हैं तो "कुरसीपुर का कबीर" में कुरसी हथियाने के आकांक्षी कबीरों को साहित्य तथा समाज के समक्ष पेश करता है। विसंगतियों तथा परिस्थितियों पर किए गए उनके व्यंग्य एकायामी न होकर बहुआयामी हैं जो त्रासदी के हर पहलू को उधेड़कर सामने रखते हैं। 'खम्भो के खेल' में जनतंत्र के स्तंभ कहे जाने वाले राजनीति, पत्रकारिता, प्रशासन और पुलिसिया क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों की कारगुजारियों एवं कुत्सित मानसिकताओं का परदाफाश किया गया है।

शब्दों और विसंगतियों के बीच तालमेल बैठाकर स्थितियों से खेलते हुए गोपाल चतुर्वेदी समाज के चप्पे – चप्पे में व्याप्त हालात को सहज सुकुमार अंदाज में व्यक्त कर देते हैं।

अपने व्यंग्यों में चतुर्वेदी जी ने आधुनिक मानसिकता में व्याप्त जहालत, अज्ञान और मूर्खता के शून्य को बड़े कौशल से उभारा है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य – विषय हमारे दैनंदिन जीवन से जुड़े प्रसंगों, आस – पास के जीते – जागते संघर्षरत चरित्रों, जुगाड़ और धाँधागरदी करते व्यक्तियों के साथ दारूण व करूण घटनाओं पर परस्पर किये जाने वाले दौगले व्यवहार एवं तौर – तरीकों का खुलासा करने का काम करते हैं।

' देश फाइलों का दर्पण है' स्वंय में एक फंतासी है जो सरकारी दफ्तरों में फाईल जैसी जीवंत विसंगति की परतों को उघाड़ता है।

तत्कालीनता और समकालीनता गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों का प्रमुख स्वर और सरोकार है उनकी लेखन यात्रा उन्हे बराबर मानवीय बने रहने और मनुष्यता, न्याय, सटीकता के प्रबल पक्षधर के रूप में पेश करती है। अपने व्यंग्यों में उन्होंने इसी यथार्थ चेतना की अलख जगाई है। बकौल गोपाल चतुर्वेदी, "व्यवस्था और तंत्र से मेरा काफी साबका रहा है। मैंने इसकी विषमताओं और फरेब को भुगता भी है । जाहिर है यह भुगता हुआ यथार्थ लेखन में उभेरगा ही।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गोपाल चतुर्वेदी अपने समय के समर्थ व्यंग्यकार हैं। जिनके व्यंग्यों में समकालीन युगीन यथार्थ चेतना भलीभाँति परिलक्षित होती है। अतः ऐसे युगचेता तथा संवेदनशील व्यंग्यकार " गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में यथार्थ चेतना पर शोधकार्य निः सन्देह महत्वपूर्ण प्रयास है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य एवं आयाम निम्नलिखित है –

1. हिन्दी गद्य साहित्य में व्यंग्य की महती भूमिका को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी व्यंग्य की यथार्थ चेतना एवं समकालीनता से सम्बन्ध को समझना।
3. हिन्दी व्यंग्य में समकालीनता के द्वारा समकालीन स्थितियों, विसंगतियों तथा विद्रुपों की अवधारणा को समझना।
4. वर्तमान परिदृश्य में जब विसंगतियों का विद्रुप चेहरा चारो तरफ अपना व्यापक प्रसार कर रहा है ऐसी परिस्थिति में व्यंग्यकार की रचना के माध्यम से आम आदमी में यथार्थ चेतना के बोध को जाग्रत करना।

5. समकालीन सन्दर्भो में युगीन सत्यों, वक्त की पेचीदगियों को उद्‌घाटित कर उससे जनमानस को अपने परिवेश के प्रति सजग बनाना।
6. राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, धर्म तथा समाज जैसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विद्यमान विसंगतियो को अनावृत कर उनसे पाठक को रूबरू करवाना।
7. गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखो में उजागर सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त मूल्यहीनता के प्रति समाज में जागरूकता लाकर व्यंग्य लेखों की सामाजिक सोद्देश्यता को स्पष्ट करना।
8. गोपाल चतुर्वेदी के विसंगतियों पर किए गए बहुआयामी व्यंग्य लेखों के द्वारा वर्तमान जीवनशैली की त्रासदियों से पाठकों को रूबरू कराना।
9. गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों की व्याख्या द्वारा सामाजिक अन्याय व आर्थिक विषमता के प्रति जनचेतना द्वारा बेहतर व्यवस्था के लिए प्रेरित करना।
10. गोपाल चतुर्वेदी के द्वारा देखे – भोगे गए यथार्थ पर आधारित व्यंग्य लेखों के माध्यम से लोक व्यवहार में विद्यमान कर्त्तव्यहीनता व मूल्यहीनता के प्रति सामाजिक चेतना उत्पन्न कर जनमानस को बराबर मानवीय बने रहने, मनुष्यता, न्याय, सटीकता के पक्षधर बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना।

5. **Review of Work Already Done on the Subject Of Proposed Research Study**

शोध संदर्भित साहित्य का सिंहावलोकन

समकालीन यथार्थ चेतना पर आधारित विभिन्न लेखकों एवं कवियों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर कई शोधकार्य हुए हैं। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध विषय गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखो में यथार्थ चेतना के चयन के दौरान निम्नलिखित साहित्य ने अपनी सीमाओं के साथ शोधार्थी का ध्यान आकर्षित किया है।

शर्मा, सुनिल कुमार (1999ई0)– ''नागार्जुन के गद्य साहित्य में यथार्थ चेतना'' इस अध्ययन में नागार्जुन द्वारा गद्य साहित्य की विविध विधाओं में किए गए सृजन की यथार्थ परकता एवं युगीन चेतना को स्पष्ट किया गया है।

यादव, इन्दुबाला(1999ई0)–''समसामयिक हिन्दी उपन्यासों में व्यक्तिवादी चेतना के विविध आयामः''– इस अध्ययन में 1989 ई0 से 1999 ई० तक के हिन्दी उपन्यासों में मौजुद व्यक्तिवादी चेतना के विविध आयामों को प्रकट किया गया है।

गुप्ता, मिथिलेश (1999ई0)– ''रांगेय राघव के कथा साहित्य में चेतना के विविध आयामः'' इस अध्ययन में रांगेय राघव की कहानियों में उपस्थित चेतना के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

नसवारिया, रमेश चन्द्र (1999ई0):– ''गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में युगबोध की अभिव्यक्ति'' इस अध्ययन में गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त समकालीन युगबोध की विशिष्टताओं को स्पष्ट किया गया है।

यादव, सतीश कुमार (2001ई0):– ''संजीव की कहानियाँः समकालीन यथार्थ की पहचान'' इस अध्ययन में समकालीनता एवं यथार्थ परक बोध से युक्त संजीव की कहानियों का विश्लेषण किया गया है।

कांत, विभूति (2000ई0):– ''समकालीन हिन्दी कहानी में मूल्य शोध'' इस अध्ययन में विगत दो दशकों के सन्दर्भ में हिन्दी कहानी परम्परा में समकालीन मूल्य शोध पर चर्चा की गई है।

रत्नू , मंजूला (2001ई0):– ''समकालीन हिन्दी कहानियो की सामाजिक अर्न्तवस्तु: कथ्य एवं मूल्यांकन'' इस अध्ययन में समकालीन हिन्दी कहानियों में वर्णित सामाजिक सरोकारों पर प्रकाश डाला गया है।

पुरोहित, कैलाश (2001ई0)– ''नरेश मेहता के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना एवं युग बोध'' इस अध्ययन में नरेश मेहता के साहित्य में अभिव्यक्त युगीन सांस्कृतिक चेतना एवं युगबोध को प्रकट किया गया है।

यादव, दिनेश (2002ई0): ''संजीव के उपन्यास: समकालीन यथार्थ की पहचान'' इस अध्ययन में संजीव के उपन्यासों में वर्णित समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।

यादव, जगदीश (2002ई0)– ''राजेन्द्र यादव के साहित्य में यथार्थ चेतना'' इस अध्ययन में राजेन्द्र यादव के सम्पूर्ण साहित्य में व्यक्त यथार्थ चेतना के विभिन्न पक्षों को रेखांकित किया गया है।

सिंह, चतुर (2002ई0)– ''श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासो में आम आदमी के जीवन का यथार्थ और स्वरूप विश्लेषण'' इस अध्ययन में आम आदमी के जीवन यथार्थ को विभिन्न कोणों से स्पष्ट किया गया है।

बाबू , दिनेश (2003ई0)– ''शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में समकालीन युगबोध'' इस अध्ययन में समकालीनता एवं युगबोध के साँचे में शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासो की समीक्षा की गई है।

गौड़, पंकज कुमार(2003ई0)– ''साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में व्यंग्य: विमर्श और मूल्यांकन'' इस अध्ययन में साठोत्तरी उपन्यासों में व्यंग्य की अन्तर्गभिता तथा उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

शर्मा, नीतू (2003ई0)– ''गिरिराज किशोर के उपन्यासो में युगीन सन्दर्भ'' इस अध्ययन में युगीन सन्दर्भों में गिरिराज किशोर के उपन्यासों की व्याख्या की गई है।

कुमारी, अनिता (2003ई0)– ''चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में युग चेतना'' इस अध्ययन में चित्रा मुद्गल के उपन्यासों और कहानियों में उभरी युगीन चेतना को व्यक्त किया गया है।

मिश्रा, सीमा (2003ई0)– ''नासिरा शर्मा के साहित्य में समाज और संस्कृति का यथार्थ'' इस अध्ययन में नासिरा शर्मा के साहित्य में वर्णित समाज तथा संस्कृति के यथार्थ परक स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

सहरिया, अजित सिंह(2004ई0)– ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में धार्मिक विसंगतियाँ'' इस अध्ययन में 1960ई0 से 1980ई0 तक की कहानियों में व्यक्त धार्मिक विसंगतियों को प्रकट किया गया है।

देवी, पूनम(2006ई0)– ''संजीव के कथा साहित्य में समसामयिक ग्रामीण जीवन का यथार्थ और लोक चेतना'' इस अध्ययन में संजीव के उपन्यास व कहानियों में वर्णित ग्रामीण यथार्थ चेतना को अभिव्यक्ति दी गई है।

बैरवा, बाबूलाल (2007ई0)– ''कवि विजेन्द्र की कविता में समकालीन यथार्थ का स्वरूप और संवेदना'' इस अध्ययन में विजेन्द्र की कविताओं में व्यक्त समकालीनता और यथार्थ परकता के स्वरूप का उद्घाटन किया गया है।

मीणा, अनिल(2008ई0)– ''उपन्यासकार यशपाल की यथार्थ रचना–दृष्टि और मानव मूल्य'' इस अध्ययन में यशपाल के उपन्यासों में व्यक्त यथार्थ चेतना और मानव मूल्यों की पड़ताल की गई है।

कुमारी, मितेश(2009ई0)– ''हिन्दी कहानी में राजनीतिक चेतना'' इस अध्ययन में 1980ई0 से 2000ई0 तक की कहानियों के संदर्भ में राजनीतिक चेतना को स्पष्ट किया गया है।

गुप्ता, मिथिलेश (2009ई0)– ''डॉ0 रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित जीवन सरोकारों का यथार्थगत अध्ययन'' इस अध्ययन में रांगेय राघव की कहानियों में व्यक्त सामाजिक सरोकारों का यथार्थगत अध्ययन किया गया है।

शर्मा, भाग्यश्री (2010ई0)– ''यशवंत व्यास के व्यंग्य साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन'' इस अध्ययन में व्यंग्यकार यशवन्त व्यास के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक सरोकारों के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

चौधरी, मीनाक्षी(2010ई0)– ''संजीव की कहानियों में युगचेतना'' इस अध्ययन में कथाकार संजीव की कहानियों में व्यक्त युग चेतना के विभिन्न आयामों को स्पष्ट किया गया है।

शर्मा, विष्णुदत्त(2007ई0)– ''रघुवीर सहाय के रचना संसार में सामाजिक चेतना एवं प्रासंगिकता'' इस अध्ययन में रघुवीर सहाय की रचनाओं में व्यक्त सामाजिक चेतना एवं उनकी प्रासंगिकता को अभिव्यक्ति दी गई है।

प्रस्तुत शोध **गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में यथार्थ चेतना** अध्ययन में समकालीन व्यंग्य के स्वरूप विश्लेषण, महत्व, परिभाषा के साथ ही गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में उपस्थित समकालीन यथार्थ चेतना के विभिन्न पक्षों एवं आयामों को स्पष्ट किया जाएगा।

6. Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation
अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कमियों की पहचान

हिन्दी व्यंग्य परम्परा एवं उसके प्रमुख व्यंग्यकारों पर समय – समय पर कई शोध कार्य किये गए हैं लेकिन अद्यतन व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है श्रीलाल शुक्ल, शंकर पुणताम्बेकर, शरद जोशी तथा रविन्द्रनाथ त्यागी पर काफी शोध कार्य हो चुका है किन्तु समकालीन गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों की यथार्थ चेतना पर शोध कार्य नहीं हुआ है।

आज हिन्दी व्यंग्य का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है तथा उसकी जन जीवन से जुड़ी यथार्थ चेतना ही उसे सदैव प्रासंगिक बनाए रखती है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य अपने समय की परिस्थितियों एवं विसंगतियों की गहन पड़ताल करते हुए पाठक के समक्ष एक विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान में व्यंग्य के बढ़ते सामाजिक सरोकारों एवं प्रतिबद्धता को देखते हुए उसके समाज सापेक्ष मूल्यों एवं चिन्तन को आम पाठक तक पहुचाना बहुत जरूरी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस शोध में वर्तमान परिदृश्य में व्यंग्यकार की सामाजिक प्रतिबद्धता एवं आस-पास घट रही विसंगतियाँ तथा उनसे जूझते आम आदमी की छटपटाहट को दर्शाने के साथ ही विसंगतियों को बदलने की व्यंग्यकार की महत्ती आंकांक्षा को भी स्पष्ट किया जायेगा।

7. Research Methodology

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य वर्तमान समय के चर्चित व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में समकालीन यथार्थ चेतना पर आधारित है। साहित्य में चित्रित सामाजिक तत्वों, परिवेश,नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक ढर्रे को पूरी तरह उजागर करने के लिये समाजशास्त्रीय पद्धति को अपनाना पड़ता है। तथा लेखक एवं पात्रों की मानसिकता का अध्ययन करने के लिये मनोवैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जाता है अतः प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक तथा समाजशास्त्रीय अध्ययन पद्धति पर केन्द्रित है। इसके अन्तर्गत गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में व्यक्त समकालीन यथार्थ चेतना के विभिन्न संदर्भों तथा आयामों का विवेचन विश्लेषण किया जायेगा। शोधक की दृष्टि से चतुर्वेदी के व्यंग्यो की समकालीनता के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन करना मेरा दायित्व रहेगा।

- शोध विषय हेतु गोपाल चतुर्वेदी के समग्र साहित्य का संकलन किया जायेगा।
- शोध विषय से सहसंबंधित पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रन्थों से सूचनाऐं प्राप्त की जायेंगी।
- शोध विषय से संबंधित सन्दर्भ पुस्तकों एवं ग्रन्थों से सामग्री संकलित की जायेगी।
- पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों,साक्षात्कार एवं पत्राचार के द्वारा आवश्यक सामग्री जुटाई जायेगी।
- विषय विशेषज्ञों एवं पूर्ववर्ती शोधकों से परामर्श एवं सूचनायें प्राप्त की जायेगी।

- इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइड जैसे Wikipedia, Google के जरिये सूचनाऐ संकलित की जायेगी।
- विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित प्रस्तावित शोध संबंधी सामग्री का संकलन संचयन किया जायेगा।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखों में यथार्थ चेतना

प्रस्तावना:—

- विषय का विश्लेषण और महत्व
- विषय का सीमा क्षेत्र
- विषय से सम्बन्धित शोध कार्य
- विषय की मौलिकता का महत्व

अध्याय :—1 व्यंग्य का अर्थ एवं स्वरूप

1. व्यंग्य का अर्थ व परिभाषा
2. व्यंग्य के भेद/प्रकार — (क) वैयक्तिक (ख) सामाजिक
3. व्यंग्य की प्रवृत्तियॉ— (क) विषयवस्तु (ख) व्यंग्य और यथार्थ
4. व्यंग्य की सम्भावना व उपादेयता

अध्याय :—2 व्यंग्य लेखन की प्रारम्भिक अवस्था

1. व्यंग्य लेखन की पृष्ठभूमि
2. व्यंग्य लेखन की कथावस्तु
3. व्यंग्य लेखन का सामाजिक यथार्थ से सम्बन्ध
4. व्यंग्य और समकालीनता
5. व्यंग्य और राजनीतिक चेतना

अध्याय :—3 गोपाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. जीवन—वृत्त
2. शिक्षा—दीक्षा

3. सामाजिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि
4. साहित्यिक रचना धर्मिता, कविता, व्यंग्य लेख आदि।
5. पुरस्कार एवं सम्मान

अध्याय :–4 गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्यों में यथार्थ चेतना

1. राजनीतिक चेतना
2. सामाजिक चेतना
3. आर्थिक चेतना
4. धार्मिक चेतना
5. सांस्कृतिक चेतना

अध्याय :–5 गोपाल चतुर्वेदी का रचना–शिल्प

1. फैंटेसी और यथार्थ
2. व्यंग्य का कथात्मक स्वरूप
3. प्रतीक और मिथक संसार से व्यंग्य चेतना
4. भाषायी चेतना और व्यंग्य लेखन

अध्याय :–6 समकालीन व्यंग्यकार और गोपाल चतुर्वेदी

1. समकालीन व्यंग्य का यथार्थ
2. समकालीन प्रमुख व्यंग्यकार
3. समकालीन यथार्थ और गोपाल चतुर्वेदी का रचना संसार
4. समकालीन व्यंग्यकारों की सीमा और गोपाल चतुर्वेदी

अध्याय :–7 समग्र आंकलन/उपसंहार

8. LIST OF REFERENCES CITED

परिशिष्ट : ग्रन्थ सूची

1. चतुर्वेदी, गोपाल – अफसर की मौत
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985
2. चतुर्वेदी, गोपाल – आजाद भारत में कालू
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
3. चतुर्वेदी, गोपाल – आदमी और गिद्ध
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
4. चतुर्वेदी, गोपाल – कबीर और कुरसी दर्शन
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
5. चतुर्वेदी, गोपाल – कुरसीपुर का कबीर
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
6. चतुर्वेदी, गोपाल – खँभो के खेल
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
7. चतुर्वेदी, गोपाल – गंगा से गटर तक
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
8. चतुर्वेदी, गोपाल – जुगाड़पुर का जुगाड़
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
9. चतुर्वेदी, गोपाल – दाँत में फँसी कुरसी
   प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
10. चतुर्वेदी, गोपाल – दुम की वापसी
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987
11. चतुर्वेदी, गोपाल – धांधलेश्वर
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
12. चतुर्वेदी, गोपाल – नैतिकता की लंगड़ी दौड़
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
13. चतुर्वेदी, गोपाल – पशुपालन–विकास
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
14. चतुर्वेदी, गोपाल – फाइल पढि पढि
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991
15. चतुर्वेदी, गोपाल – फार्म हाउस के लोग
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
16. चतुर्वेदी, गोपाल – भगवान न हो पाने का संत्रास
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
17. चतुर्वेदी, गोपाल – भारत और भैंस
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
18. चतुर्वेदी, गोपाल – राम झरोखे बैठि के
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
19. चतुर्वेदी, गोपाल – हुक्का, हम और राजनीति
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
20. चतुर्वेदी, गोपाल – 51, श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
    प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

सहायक ग्रन्थ

(अ) हिन्दी ग्रन्थ

1. गर्ग, डॉ. शेरजंग — गोपाल चतुर्वेदी संकलित व्यंग्य
   नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 2011

2. घोटड़, डॉ. रामकुमार — इक्कीसवी सदी के चर्चित व्यंग्य
   हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2011

3. चौधरी, डॉ. तेजपाल — हिन्दी व्यंग्य बदलते प्रतिमान
   पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2003

4. चौधरी, डॉ. राजेश — हिन्दी का समकालीन व्यंग्य साहित्य
   संघी प्रकाशन, जयपुर, 1998

5. तिवारी, डॉ. रामचन्द्र — हिन्दी का गद्य साहित्य
   विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006

6. नाहल, आई.जे. — इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि व्यंग्य
   हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2011

7. पाटिल, डॉ. मधुसूदन — व्यंग्यालोचन विमर्श
   हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2011

8. शर्मा, डॉ. कमलेश — व्यंग्य विविधा
   राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2002

9. शुक्ल, श्रीलाल व जनमेजय, प्रेम — हिन्दी हास्य व्यंग्य संकलन
   नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 2011

10. सहगल, डॉ. मनमोहन — हिन्दी शोध तंत्र की रुप रेखा
    पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2008

11. सिंह, डॉ. विजय पाल — हिन्दी अनुसंधान
    लोक भारती प्रकाश, इलाहाबाद, 2007